शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी कहानियों में ग्रामीण जीवन और आर्थिक परिवेश

डॉ. इन्दु मिश्रा (विभागाध्यक्ष)
डॉ.अरविन्द शाह वरकडे (अतिथि विद्वान्)
अर्थशास्त्र विभाग
रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय.
मण्डला, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

किसी भी देश का आर्थिक एवं सामाजिक विकास मूलतः उस देश के ग्रामीण परिवेश से जुड़ा रहता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था देश की अर्थव्यवस्था की प्रमुख धुरी है तथा राष्ट्रीय आय में अहम अंशदान प्रदान करती है। यदि साहित्य की दृष्टि से देखा जाये तो हम कह सकते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य समाज की परिस्थियों तथा विषमताओं से ही प्रभावित एवं सृजित होता है। हमारे मूर्धन्य कथाकारों ने अपने साहित्य में ग्रामीण समाज के रहन-सहन, समस्याओं को अत्यंत सजीवता से चित्रण किया है।

मुख्य शब्द - आर्थिक परिवेश-सामाजिक प्रथायें- अर्थव्यवस्था - कृषिगतसमस्याएँ।

भूमिका

प्रेमचंद की कहानियाँ प्रायः आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के सूत्र से परिभाषित की जाती है। प्रेमचंद जी की एक प्रमुख कहानी है , ठाकुर का कुँआ। "ठाकुर का कुँआ " में भारतीय सामाजिक यथार्थ जिस लेखकीय तटस्थता किन्तु पैनी संवेदना के साथ व्यक्त हुआ है , वह इस कहानी के माध्यम से यथार्थ का चित्रण करता है कि किस प्रकार जातिगत विभेद छुआछूत की भावना जन-जीवन को प्रभावित करते हैं। सामाजिक भेदभाव देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास को बाधा पहुँचा ता है। सामाजिक भेदभाव , ऊँच-नीच, छुआछूत, गरीबी और शोषण ने हमारे समाज को हमारे राष्ट्र को अत्यंत प्रभावित किया है तथा राष्ट्र की चूलें हिलाकर रख दी हैं। सामन्तवाद और पूँजीवाद के नकारात्मक प्रभाव करेला एवं नीम चढ़ा जैसी उक्ति को चरितार्थ करते हैं। समाज में एक वर्ग शासक होता है तो दूसरा वर्ग शोषित एवं पीड़ित होता है। सामन्तवाद और पूँजीवाद सिर्फ विचारधारा ही नहीं है बल्कि विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को नियंत्रित भी करता है। एक छोटी कहानी उस एक बड़े संग्रह का कच्चा चिट्ठा बयान करती है। छोटी और विश्वसनीय कथावस्तु उस भयावह स्थिति को सजीवता से चित्रित करती है। 'ठाकुर का कुँआ' कहानी समाज की तात्कालिक परिस्थिति का दुखद चित्रण करता है कि कैसे गंगी अपने बीमार पति के लिये पानी लेने ठाकुर के कुंए पर जाती है परन्तु ठाकुर के देख लेने के भय से पानी छोड़कर भागते हैं तथा घर आकर देखती है कि उसका पति जोखू उसी सड़े बदबूदार पानी को नाक बंद करके पी रहा है। 'कफन' कहानी भी घीसू और उसके पुत्र की स्वयं नशे में डूबे रहने तथा बहू की दयनीय स्थिति का चित्रण करती है। भूख , प्यास नशा यह मानवीय संवेदना को समाप्त कर देता है। व्यक्ति अपने प्रियजन की पीड़ा को भी नहीं महसूस कर पाता।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रेमचंद का उपन्यास 'गोदान' भारतीय किसानों की भयावह दुर्दशा का चित्रण करता है। कैसे बैलों की जोड़ी का न होना कृषक को सब कुछ दाँव पर लगाने को विवश कर देता है तथा अन्नदाता कहा जाने वाला कृषक भूख और गरीबी में जीवन जीने को विवश होता है, इसका सजीव चित्रण हमें गोदान में देखने को मिलता है।

कृषि जो आज भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ कही जाती है उसकी उन्नति पर जो ध्यान दिया जाना चाहिये वह आज भी नहीं दिया जा रहा है। कृषि क्षेत्रों में स्वरोजगार की व्यापक श्रृंख्ला निर्मित की जा सकती है बशर्ते कृषकों को खाद-बीज , सिंचाई, बिजली, परिवहन, भंडारण की अपर्याप्त सुविधायें एवं अनुदान दिये जायें। कृषक आज भी आत्महत्या करने पर मजबूर है।

कहानियाँ ग्रामीण परिवेश एवं संस्कृति को उजागर कर समाज की आर्थिक दशा और दिशा का भी चित्रण करती है।

दफ्तर संस्कृति : कहानियाँ सामाजिक विषमता का ही चित्रण नहीं करती बल्कि रोजगार एवं जीवन से जुड़े अन्य पक्षों का भी चित्रण करती है। नौकरशाही-राजशाही-बाबूशाही इत्यादि के कारण जन-साधारण को जो पीड़ा होती है, उसका चित्रण भी साहित्य करता है। हरिशंकर परसाई की 'भोलाराम का जीव' दफ्तरों की कार्य पद्धति से सामान्य व्यक्ति कितना आहत होता है ; उसका चित्रण है। हमारे देश के कार्यालयों में किस तरह व्यवस्थायें हैं ? कैसे लोग यहां से वहां चक्कर काटते हुये एड़ियाँ घिसने को मजबूर होते हैं यह विभिन्न कहानीकारों में उकेरा है।

वस्तुतः किसी भी युग का साहित्य उस युग में निहित स्थितियों का बिम्बात्मक स्वरूप होता है। प्रेमचंद युग की आदर्शोन्मुखी प्रवृतियाँ अपने रचनात्मक पूर्ण ग्रहों के साथ प्रस्तुत हुई जिन्हें प्रेमचंद युगीन कहानीकारों ने स्पष्ट स्वरूप प्रदान किया। महिला कहानीकारों ने महिलाओं पर सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक तथा बाल श्रमिकों की समस्यायें तथा विषम स्थिति का चित्रण किया गया। शिवानी-कृष्णा सोबती मन्नू भंडारी ऊषा प्रियम्बदा ममता कालिया जैसी महिला कहानीकारों ने अपने साहित्य में स्त्री की दिशा एवं दशा का सजीव चित्रण किया है।

जनवादी कहानी की परम्परा का आरम्भ भी प्रेमचंद की 'कफन' और 'पूस की रात ' जैसी कहानियों से माना गया। भारतीय परिवारों की स्थिति एवं विवशता का चित्रण 'वापसी' कहानी में मिलता है। मध्यमवर्गीय परिवारों में बदलते मूल्यों का सच वापसी कहानी में देखने को मिलता है।

अन्ततः हम कह सकते हैं कि ग्रामीण संस्कृति एवं परिवेश तथा ग्रामीणों की दशा एवं दिशा को समझने का कहानियाँ एक सशक्त माध्यम है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी कथा साहित्य।
2. हिन्दी कथायें।